भूमिका

सीखने-सिखाने के अनुभवों को जीवंत बनाने के लिये शिक्षकों द्वारा कक्षा की आवश्यकता के अनुरूप काम करने के तरीके तय करना, गतिविधियों में विविधता तथा बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करना, मदद करता है।

इन बातों को सामने रखकर, इस पाठ्यक्रम का निर्माण, केयर इंडिया के बालिका शिक्षा कार्यक्रम के तहत किया गया है। सुबीर शुक्ला ने केयर टीम से विमर्श करके इस पाठ्यक्रम का पहला प्रारूप बनाया था। इस पाठ्यक्रम का उपयोग केयर के उड़ान कार्यक्रम, सामुदायिक विद्यालय, गुजरात व उत्तर प्रदेश सरकार के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में किया गया है। इन अलग-अलग जगह के विद्यालयों के अनुभवों के आधार पर इस पाठ्यक्रम को केयर की टीम ने संशोधित किया। संशोधन करते समय शिक्षकों के अनुभव व शिक्षक प्रशिक्षण से जुड़े लोगों के सुझावों को मद्देनज़र रखा गया है।

यह पाठ्यक्रम कक्षावार बना है। हर कक्षा के स्तर के अनुरूप सीखने के उद्देश्यों को रखा गया है। तात्पर्य यह है कि क्या सिखाना चाहते हैं वह सीधे और साफ़ शब्दों में शिक्षकों के सामने हो। जहाँ महसूस किया कि किसी "सीखने के उद्देश्य" को गतिविधि के रूप में लिखने से बात ज़्यादा स्पष्ट होगी तो वहाँ उसकी प्रस्तुति उसी प्रकार से है।

शिक्षक इन उद्देश्यों को सामने रखकर योजना बना सकते हैं कि वह कैसे काम करवाना चाहते हैं। कौन-सी सामग्री का उपयोग करना चाहते हैं। पाठ्यपुस्तक या किसी और किताब का कौन-सा हिस्सा ठीक रहेगा। किसी एक बिंदु पर कई प्रकार से काम के तरीके (गतिविधियाँ) सोच सकते हैं। कितना समय एक मुद्दे पर देना ठीक रहेगा, तय कर सकते हैं। इन सीखने के उद्देश्यों से विविध प्रकार के अनुभव रचने में शिक्षकों को काफ़ी मदद मिलेगी।

इस पाठ्यक्रम को देखने से आपको लगेगा कि किसी भी हिस्से को एक बार में पढ़ाकर वहीं नहीं छोड़ दिया गया है। हर अवधारणा पर बार-बार वापिस लौटने की गुंजाइश है। ऐसा इसलिए, क्योंकि हर अवधारणा को अच्छे से समझ पाने के लिये ज़रूरी है कि एक बार नहीं, उस पर कई बार काम किया जाए।

यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को विविध संदर्भ रचकर, अलग-अलग उद्देश्यों के लिये, विभिन्न भाषायी शैलियों को विकसित करने को प्रोत्साहित करता है। सुनकर समझना, पढ़कर समझना, बोलना व लिखने के अलावा कल्पना व फ़ैन्टेसी एवं तार्किक भाषायी क्षमताओं पर काम करने के अवसर मौजूद हैं। पाठ्यपुस्तक के अलावा अखबार, पत्रिका, शब्दकोष कहानी/कविता की किताबें, लोक गीत/कथा, चुटकुले व कार्टून आदि का उपयोग करने से रोचक गतिविधियाँ बनाने में इस पाठ्यक्रम से मदद मिलेगी। भाषा की जीवंत कक्षा बनाने व बच्चों को रुचिपूर्ण चुनौती देकर सिखाने में शिक्षक इन बातों का ध्यान रख सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के प्रभावी इस्तेमाल तथा भाषा को समझने व काम करने के तरीके (गतिविधि) बनाने के लिये शिक्षकों की कार्यशाला में सामूहिक विचार-विमर्श मदद

करेगा। शिक्षकों के साथ कार्यशाला में ये विचार-विमर्श और पाठ्यक्रम के कुछ बिंदुओं को करके देखना, साफ़ समझ और कारगर तरीके ढूँढने के लिये ज़रूरी है। इन "सीखने के उद्देश्यों" को ध्यान में रखकर गतिविधि संग्रह बनाने का काम भी चल रहा है। इस गतिविधि संग्रह के उपयोग से बहुत से शिक्षकों को मदद मिलेगी।

इसका उपयोग अलग-अलग संदर्भों, जैसे सरकारी विद्यालयों व गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयों व ब्रिज कोर्स में किया जा सकता है। उम्मीद है कि शिक्षकों व बच्चों को इस पाठ्यक्रम से काम करने में मज़ा आएगा और भाषा सीखना सहज तरीके से हो पाएगा। इस का उपयोग करने वालों के अनुभव, उनकी समालोचना, सुझाव आदि किताब को निरंतर बेहतर बनाने में मददगार होंगे। आप से निवेदन है कि अपने सुझाव हमें भेजें:-

Kokila Gulati

dkfdyk xqykVh]

केयर इंडिया

lq>ko Hkstus dk irk%&

बालिका शिक्षा परियोजना, केयर इंडिया
27, हौज़ ख़ास विलेज
नई दिल्ली-111 016
ई-मेल:- fjami@careindia.org
gverma@careindia.org

care®

विषय सूची

कैसे सिखाएँ – भाषा ? 1

कक्षा – 1 8

कक्षा – 2 11

कक्षा – 3 15

कक्षा – 4 20

कक्षा – 5 25

कैसे सिखाएँ - भाषा?

जब बच्चे विद्यालय आते हैं तो उनकी उम्र पाँच-छः साल की हो चुकी होती है, और इस उम्र तक बच्चे स्पष्ट ढंग से बातचीत कर सकते हैं। घर परिवार में, मौहल्ले में, दोस्तों के साथ बात करना, उनके जीवन का हिस्सा बन चुका होता है। हम कह सकते हैं कि सुनना, समझना व बोलना बच्चों को विद्यालय आने से पहले आता है। यह सीखना सहज तरह से हो जाता है।

vuHko%—कई विद्यालयों में कक्षा 4 व 5 के बच्चों से सहज-सा प्रश्न जैसे 'बरसात होने पर, आस-पास कैसा लगता है?' पूछने पर बड़ा विचित्र अनुभव हुआ।

बच्चे फ़ौजी की तरह तन कर या अकड़ कर खड़े होते, दाँत पीस कर ऊँची आवाज़ में एक-आध वाक्य बोलते और कई बार बोलने में अटकने या हकलाने लगते, ऐसा क्यों?

अब ज़रा ग़ौर करें कि सहज रूप से बात-चीत करने में बच्चों ने भाषा में क्या सीखा। बच्चे अपने परिवार व परिवेश में लोगों को बात करते सुनते हैं और इस क्रम में ध्वनियों को अर्थ से जोड़ते हुए देखते व सुनते हैं। शुरू में कुछ ऊट-पटाँग बोलने व अपने आस-पास के लोगों की प्रतिक्रिया के अनुरूप बच्चे यह समझ जाते हैं कि कौन से शब्द (ध्वनि समूह) का रिश्ता किस अर्थ से है। इन

अनुभवों से गुज़र कर वे भी ध्वनि समूह (शब्द) को अर्थ से जोड़ने लगते हैं। बच्चों का कोई शब्द जैसे पानी बोलना ध्वनि समूह ''पा व नी'' का प्यास बुझाने वाली (तथा नहाने वाली, धोने वाली) चीज़ से संबंध बिठाना है। यहां बच्चे अवधारणा बनाने का काम भी कर रहे हैं। हम देख सकते हैं कि भाषा का विकास किसी संदर्भ में हो रहा है। इस प्रक्रिया से गुज़र कर बच्चे वाक्य का अर्थ भी समझने लगते हैं। इसी क्रम में उनकी वाक्य के ढाँचे की समझ बनती है।

आगे चलकर बच्चे जब कोई वाक्य बोलते हैं, जैसेः– ''मटके में पानी रखा है'', तो इसमें शब्दों को एक ऐसे क्रम में जमाया गया है, जिसके कारण अर्थ बनता है। कोई ऐसा नहीं कहता कि, ''पानी में मटका है'', यानी, बच्चों की यह पकड़ बन गई है कि किस क्रम से शब्दों को बोलें तो अर्थ निकलेगा। आप ऐसे उदाहरण अपने अनुभव से ढूँढ सकते हैं।

अब जब ये बच्चे बारिश के दौरान आसमान से पानी गिरता देखते हैं एवं इस घटनाक्रम का नाम सुनते हैं, तो पानी के इस स्वरूप को अपने पहले के पानी के अनुभवों से जोड़कर समझने की कोशिश करते हैं। बारिश में जो महसूस होता है वह केवल वर्तमान अनुभव से न होकर, पानी के पहले के अनुभवों से भी संबंधित है। यहां शब्द "पानी" पहले के एवं वर्तमान अनुभव को जोड़ने की कड़ी है। यहाँ नया शब्द बारिश पानी बरसने के अनुभव को समेटकर एक शब्द के रूप में स्मृति में रखता है।

यहाँ हम देख सकते हैं कि "शब्दों के जाल" के रूप में भाषा अनुभवों को व्यवस्थित करने का काम कर रही है।

इसके साथ ही यह बात भी निकलती है कि अनुभव का दायरा बढ़ने से भाषा का विकास भी होता है। और ज्यों-ज्यों अनुभव बढ़ते हैं या दूसरे के अनुभव सुनना/समझना हो, तो भाषा की आवश्यकता महसूस होती है। इस स्थिति में किसी अनुभवी व्यक्ति की मदद से सीखना तेज़ी से हो सकने की संभावना है।

विद्यालय आने से पहले ज़्यादातर बच्चे इस जटिल पहलू पर अधिकार कर चुके होते हैं। विद्यालयों में ऐसा क्या करें कि बच्चे आगे की भाषा संबंधी क्षमताओं को सहज एवं प्रभावी तरीके से सीख सकें।

Åij dh ckr l Li"V g fd vuHko d nk;j dk c<kuk vkj foLr'r nk;j e Hkk"kk dk mi;kx] Hkk"kk fodkl dh uho gA fofo/k lnHkk e] vyx&vyx <x ¼'kfy;k e½ l ,o vko';drk d vu:i Hkk"kk dk :Ik o mi;kx cny ldrk g] foLr'r gk ldrk gA vr% f'k{kd dh Hkfedk ,l ekd cuku dh g ftle cPp Hkk"kk dk fofHkUu rjhdk l mi;kx dj ik,A bue dYiuk djuk] fopkj djuk] fopkjk dk 0;ofLFkr djuk ,o vfHk0;fDr djuk] rFkk nlj d fopkj le>uk vkfn e[; ?kVd gA mnn';g fd cPp viu 0;fDrxr o lkekftd thou d fHkUu {k=k e bu {kerkvk dk vljnkj mi;kx dj ldA

Hkk"kk fl[kkr le; f'k{kd uhp nh xb ckrk dk /;ku j[k ldr gA
विद्यालय का वातावरण, घर तथा मौहल्ले के वातावरण से अलग होता है, यदि विद्यालय का वातावरण भी सहज हो और बच्चों को बेझिझक (एवं बिना दबाव के) अपनी बात कहने-सुनने का अवसर हो तो बच्चों में भाषायी क्षमता विकसित होने की बेहतर संभावना है।

स्कूल में भाषा सिखाने में बच्चों की उन भाषायी क्षमताओं से काम शुरू किया गया है, जिसे सीख कर वह विद्यालय आते हैं। जब बच्चों को सहज ढंग से बातचीत करना आता है, तो शुरू से ही सुनने व बोलने की क्षमता को और समृद्ध करने का कार्य है। इसके लिये बच्चों के साथ घर-परिवार, मित्र, खेल व परिवेश के अन्य मुद्दों पर चर्चा, कहानी, कविता सुनाना एवं सुनना एवं चित्रों पर बातचीत आदि शामिल हैं। इन मुद्दों को पाठ्यक्रम में रखने के पीछे सोच यह है कि मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता सुदृढ़ होने के अलावा कक्षा में सहज वातावरण व बच्चों के जीवन के अनुभव को विद्यालय में लाया जाये। इससे बच्चों के सामाजिक जीवन तथा विद्यालीय जीवन में जुड़ाव बना रहेगा। बच्चों को अपनी बात कहने एवं दूसरों की बात सुनने तथा समझने के अलग-अलग तरह के अवसर सुनिश्चित होंगे।

मौखिक भाषा पर काम करना केवल शुरूआती दौर ही में नहीं, बल्कि आगे की कक्षा में भी शामिल है, जैसेः– किसी मुद्दे पर अपनी बात के पीछे का तर्क देना, तथ्य व मत में अंतर करना आदि। कल्पना व फ़ैन्टेसी को भी मौखिक (एवं लिखित) खंड में काफ़ी जगह दी गई है जिस से बच्चों में सृजनशीलता का भाव बना रहे तथा और समृद्ध हो।

शुरूआती कक्षा में घर की भाषा में बोलने व लिखने के मौके देना, सोच-विचार कर रखा गया है। इसके पीछे मानना यह है कि घरेलू भाषा मानक भाषा के समझने व सीखने में विघ्न नहीं डालती है, बल्कि दोनों की पकड़ एक दूसरे को समृद्ध करती है। साथ ही बच्चे विद्यालय में सहज महसूस करें तथा बच्चे एवं शिक्षक के मन में घर की भाषा के प्रति सम्मान एवं महत्व का भाव हो। इसके साथ ही मानक भाषा

सीखने और समझने का काम भी चलता रहेगा। आगे की कक्षाओं में भी भाषा शिक्षण में घरेलू व मानक दोनों रूपों को शामिल किया गया है।

vuHko% कई बार चौथी एवं पाँचवीं कक्षा के बच्चों को कोई कहानी की किताब पढ़ने के लिए दी, तो उन्होंने तेज़ आवाज़ में पढ़ा, पर यह पूछने पर कि किस बारे में पढ़ा या क्या पढ़ा, बच्चे असमंजस में पड़ जाते हैं। बच्चों ने जो पढ़ा, उन्हें समझ नहीं आया। ऐसा क्यों?

हमने देखा है कि भाषा विकास के लिए संदर्भ से जुड़ाव बना रहना महत्वपूर्ण है। इसलिए पढ़ना सीखने में, संदर्भ से शब्द पहचान एवं शब्द से अक्षर/मात्रा पहचान तथा वापस अक्षर तथा मात्रा जोड़कर शब्द बनाना/पढ़ना एवं संदर्भ में शब्दों को पढ़ने का तरीका अपनाया गया है। इसका आशय यह है कि बच्चे अनुभव एवं संदर्भ के आधार पर आगे बढ़ें और उनका अर्थ से जुड़ाव यथासंभव बना रहे। बच्चों में पढ़ने के साथ, पढ़ी सामग्री समझना मुख्य माना गया है। अलग-अलग तरह की सामग्री जैसे कहानी, कविता, नाटक, पत्रिका, अखबार, चित्र कहानी, कार्टून, विज्ञापन, फ़ैन्टेसी आदि पढ़ने से रुचि भी होगी और पढ़ने की क्षमता भी बेहतर होगी। पढ़ी सामग्री को समझने के अलग-अलग काम करने को इंगित करता है यह पाठ्यक्रम। जैसे – पढ़ी सामग्री के आधार पर प्रश्न बनाना, चित्र बनाना, रंग भरना, अपेक्षित जानकारी ढूँढना, चर्चा करना आदि। उद्देश्य यह है कि लिखित सामग्री पढ़ कर वे आनंद महसूस करें। इसके साथ ही लिखित सामग्री समझ कर पढ़ें और अपनी स्वतंत्र राय बनायें व लेखन में पूर्वाग्रह/झुकाव पहचान सकें।

शिक्षकों को ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषा के उपयोग से विचार के साथ कुछ और भी संप्रेषित होता है। वह क्या है? यह हैं मान्यताएँ व मूल्य जैसे –"वह गरीब होने पर भी ईमानदार था" अथवा "यह लड़की होकर भी बहादुर है" आदि में खास तरह के पूर्वाग्रह हैं। ऐसा लिखा हुआ आपने कई लिखित सामग्री में पाया होगा। कैसे निपटें इस तरह की बातों से?

लेखन क्षमता को समृद्ध करने के लिए अलग-अलग उद्देश्यों से लिखने का कार्य करना होगा। विविध रूप से लेखन के मौके हैं इस पाठ्यक्रम में, जैसे कहानी/कविता बनाना, कल्पना/फ़ैन्टेसी लिखना, किसी मुद्दे पर अपने विचार लिखना, लिखकर निर्देश देना, विज्ञापन बनाना, जानकारी सटीक ढंग से प्रस्तुत करना, वर्णन करना आदि। शिक्षक यह ध्यान में रखें कि बच्चे अपनी बात व्यवस्थित ढंग से लिख सकें। अपने लेख का संपादन व साथियों के लेखन का संपादन भी इस क्षमता को सुदृढ़ करेगा।

व्याकरण सिखाने का ढाँचा इस प्रकार है कि पाठ्य-सामग्री में पैटर्न पहचान कर, किसी खास नियम को पकड़ना, जैसे, कहानी में ऐसे शब्दों को पहचानना जिससे किसी कार्य का होना इंगित होता हो। पैटर्न पहचानने के बाद इसका नाम बताया जा सकता है जैसे कि उपरोक्त उदाहरण में क्रिया है। परिभाषा सिखाने पर जोर नहीं है, बल्कि बच्चे खुद परिभाषा बना सकते हैं।

शिक्षक भाषा सिखाने की योजना बनाते समय ध्यान रखें कि पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना, अलग-अलग नहीं चलता। जो पढ़ा है, इस पर बोलने का काम हो

सकता है या जो लिखा है उसे पढ़ने का काम। शिक्षक सोच सकते हैं कि बच्चों को कहानी/कविता बनाने तथा लिखने, कहानी पर नाटक करने, कविता पर चित्र बनाने, विज्ञापन पढ़ने एवं बनाने, लिखकर तर्क देने आदि में किन भाषायी क्षमताओं का विकास होगा और इसे किस क्रम में कक्षा में किया जाए। भाषा सिखाने के उद्देश्यों के अनुरूप काम का तरीका अपनाया जा सकता है। मूल्यांकन करते समय शिक्षक उन जगहों/मुद्दों की पहचान करें जहां बच्चों को मदद की ज़रूरत है। यहां भी शिक्षकों को भाषा सिखाने के उद्देश्यों को ध्यान में रखना बेहतर होगा।

विविधापूर्ण पाठ्य सामग्री के उपयोग से विविध प्रकार से काम करने के मौके बच्चों को उपलब्ध कराने में मदद मिलती है। शिक्षक इस पाठ्यक्रम पर काम करते समय पाठ्यपुस्तक के साथ पुस्तकालय का उपयोग अवश्य करें। इससे सीखना रुचिकर रूप से हो पाएगा।

care

d;j Vhe